राष्ट्रीय हिंदी मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष-1, अंक-1, जनवरी 2026, पृष्ठ-32, मूल्य-100/-

PRGI NO : CTBIL/25/A3539

जयति लोकदर्शन

लोक संवेदना का स्वर...

साय शासन मॉडल

ग्राउंड से ग्रोथ तक : जहां फैसले उतरते हैं जमीन पर

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी की क्षेत्रवासियों एवं प्रदेशवासियों को अशेष शुभकामनाए

रूपचंद देवांगन
प्रो. परमेश्वरी ब्रिक्स

शकुंतला रूपचंद देवांगन
सभापति जनपद पंचायत कुरूद
जिला- धमतरी, छत्तीसगढ

माँ परमेश्वरी ब्रिक्स

फ्लाई एस ईट के निर्माता

रेत, गिट्टी, मुरुम, फ्लाई एस के सप्लायर

चारभाठा (नारी) कुरुद, जिला- धमतरी

निवास - चारभाठा, पो. नारी, थाना - कुरुद, जिला - धमतरी, छत्तीसगढ़

मासिक पत्रिका
विश्वसनीय खबरों की नई लहर
जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

स्वामी, प्रकाशक एवं प्रधान संपादक
सतीश शर्मा

संपादन सलाहकार मंडल
प्रो. डॉ. अनुसुइया अग्रवाल
डुमनलाल ध्रुव

विधिक सलाहकार
लक्ष्मीकांत द्विवेदी

जिला ब्यूरो
तुकाराम कंसारी (गरियाबंद)
खिलेश्वर शर्मा (रायपुर)
प्रेम कुमार चक्रधारी (रायपुर)

प्रसार प्रकल्प
प्रशांत कुमार सोनवानी
रामेश्वर साहू

तकनीकी सहायक
प्रतीक अग्रवाल
राज शुक्ला

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त समाचार, लेख एवं विचार संबंधित संवाददाता, लेखक, विज्ञापनदाता के निजी विचार हैं। इनके लिए संपादक, प्रकाशक अथवा मुद्रक, उत्तरदायी नहीं होंगे। पत्रिका का उद्देश्य सूचना प्रदान करना है। किसीव्यक्ति, संस्था, समुदाय की भावना को ठेस पहुंचाना आशय नहीं है। त्रुटिवश प्रकाशित किसी भी सामग्री हेतु खेद है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालीन क्षेत्र कुरुद होगा।

अनुक्रमणिका

06 एक एक्सीडेंट और....इलेक्ट्रीशियन से चित्रकार बन गए कुरुद के बसंत साहू

10 प्राचीन विरासत बनेगी विश्व धरोहर यूनेस्को टैग की ओर सिरपुर

- कर्तव्य पथ पर दिखेगा छत्तीसगढ़ का गौरव... 12
- ग्राउंड से ग्रोथ तक : जहां फैसले उतरते हैं... 14
- कविता से सत्ता तक: अटल बिहारी वाजपेयी... 18
- चावल उत्पादन में भारत नंबर-1 20
- राज्य बाल संरक्षण नीति से मजबूत... 22
- एक धड़कन, जिसने बदल दी ज़िंदगी... 24
- किडनी रोग ने छीनी सैकड़ों जिंदगियां... 26
- बजट की कसौटी पर छत्तीसगढ़... 27
- धुरंधर का गाना 'शरारत' बना चार्टबस्टर... 30

स्वामी, प्रकाशक व संपादक : सतीश शर्मा (Press and Registration of Periodicals Act, 2023 के अंतर्गत समाचार चयन के लिए उत्तरदायी); मुद्रक : अमित कुमार पटेल द्वारा ए.आर. प्रिंटर्स, बी-1, रेमंड शोरूम के सामने, श्याम मार्केट, पंडरी, रायपुर (छ.ग.) में मुद्रित एवं ब्राह्मण पारा नारी (कुरुद), जिला-धमतरी (छ.ग.) से प्रकाशित।
PRGI Reg. No. CTBIL/25/A3539 , email – cglokdarshan@gmail.com, www.cglokdarshan.com, mo. 9893664533

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

सम्पादकीय

नववर्ष, नया संकल्प और लोक संवेदना का गणतंत्र

सतीश शर्मा
संपादक
जयति लोकदर्शन

हर नया वर्ष मात्र कैलेंडर की तिथियों का परिवर्तन नहीं होता, बल्कि यह समाज के सामने आत्ममंथन, नवसंकल्प और नई दिशा निर्धारित करने का अवसर भी लेकर आता है। जनवरी का महीना इस अर्थ में और अधिक महत्वपूर्ण है कि यही वह समय है जब हम अपने गणतंत्र को स्मरण करते हैं उस शासन-व्यवस्था को, जिसकी आत्मा लोक से निकलती है और लोक के कल्याण के लिए समर्पित होती है। किसी भी युग की वास्तविक पहचान उसके नारों, घोषणाओं या आंकड़ों से नहीं होती, बल्कि उस लोक-संवेदना से होती है, जो समाज के भीतर निरंतर प्रवाहित रहती है। आज का भारत विकास, योजनाओं और उपलब्धियों की भाषा तो बोल रहा है, परंतु यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक है कि इन उपलब्धियों में आम नागरिक की वास्तविक भागीदारी कितनी है और उसकी आवाज कितनी सुनी जा रही है।

लोक और व्यवस्था के बीच सेतु

"जयति लोकदर्शन" इसी लोक-संवेदना को केंद्र में रखकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। यह न तो सत्ता की अनुगामिनी है और न ही विरोध का मंच। इसका उद्देश्य लोक अर्थात जनता और व्यवस्था के बीच एक संवेदनशील, संतुलित और सार्थक संवाद स्थापित करना है। इसलिए भी इनका नाम "जयति लोकदर्शन" प्रासंगिक है कि जनता की अभिव्यक्ति, भागीदारी और विचारों की जय हो। हम मानते हैं कि गणतंत्र केवल एक संवैधानिक ढाँचा नहीं, बल्कि जनता के अनुभवों, अधिकारों और अपेक्षाओं का जीवंत स्वरूप है। जब किसान, मजदूर, महिलाएँ, युवा और समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति अपने अधिकारों और अवसरों को वास्तविक रूप से प्राप्त करते हैं, तभी गणतंत्र अपनी पूर्ण शक्ति और गरिमा के साथ प्रकट होता है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि राजनीति और समाज के बीच बढ़ती संवादहीनता को कम किया जाए और लोक की आवाज को वास्तविक विमर्श का केंद्र बनाया जाए।

पत्रकारिताः सूचना से आगे, संवेदना तक

"जयति लोकदर्शन" समाचारों को केवल सूचना भर के रूप में प्रस्तुत करने में विश्वास नहीं करता। हमारा प्रयास रहेगा कि प्रत्येक समाचार के सामाजिक प्रभाव, उसके निहितार्थ और लोक-संवेदना को भी समान महत्व मिले। नव वर्ष और गणतंत्र के इस पावन अवसर पर "जयति लोकदर्शन" एक स्पष्ट संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है -

लोक के साथ, लोक के लिए और लोक-संवेदना के स्वर में।

संपादकीय दर्शन और प्रतिबद्धता

"जयति लोकदर्शन" का संपादकीय दर्शन इस दृढ़ विश्वास पर आधारित है कि पत्रकारिता का मूल उद्देश्य लोकहित की रक्षा और सत्य की स्थापना है। यह मंच किसी सत्ता, दल या व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना और जनता की आवाज का प्रतिनिधि है।

हम मानते हैं कि पत्रकारिता केवल घटनाओं का विवरण नहीं, बल्कि लोक-विवेक को जाग्रत करने और समाज को सही दिशा देने का सशक्त माध्यम है। इसी कारण "जयति लोकदर्शन" निर्भीक, निष्पक्ष और तथ्यपरक पत्रकारिता में विश्वास करता है।

सत्ता से प्रश्न पूछना, भ्रष्टाचार और अन्याय को उजागर करना, तथा शोषित, वंचित और उपेक्षित वर्गों की आवाज को प्रमुखता देना – यही हमारी संपादकीय प्रतिबद्धता है। हम न भय के आगे झुकते हैं, न प्रलोभनों से विचलित होते हैंय हमारी लेखनी सत्य, तर्क और प्रमाण के आधार पर चलती है।

इस वैचारिक यात्रा में "जयति लोकदर्शन" के प्रथम पड़ाव से लेकर आज तक जिन मित्रों, सहयोगियों और शुभचिंतकों ने विश्वास, समर्थन और स्नेह प्रदान किया है, उनके प्रति हम विनम्रता और गौरव के साथ हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। आपके प्रोत्साहन, आलोचनात्मक सुझाव और निरंतर सहभागिता ने इस मंच को सुदृढ़ दिशा प्रदान की है।

आप समस्त सुधि पाठकों को प्रथम अंक और प्रथम प्रयास समर्पित करते हुए अपने पाठकों, सहयोगियों और जागरूक नागरिकों से अपील करते हैं कि वे अपने विचार, सुझाव और अनुभव हमारे साथ साझा करें। यदि यह पत्रिका पाठकों को सोचने, प्रश्न करने और संवाद स्थापित करने की प्रेरणा दे सके, तो यही इसकी सबसे बड़ी सफलता होगी।

लोक की दृष्टि को दिशा देना और सत्य की विजय सुनिश्चित करना – यही "जयति लोकदर्शन" का मूल संकल्प और संपादकीय धर्म है।

नववर्ष में...?

नववर्ष में शहर जगमगाते हैं – जैसे अँधेरा हमारी बस्तियों से कभी गुजरा ही न हो।
पूँजीपतियों की जेबें और मोटी हो जाती हैं, वे भविष्य को ब्याज पर खरीद लेते हैं –
नव संकल्प कहलाता है यह।
हम?
हम भविष्य नहीं देखते, हम भविष्य ढोते है, ईंटों, लोहे और पसीने में।
हमारे हिस्से न कोई सपना है, न ख्वाबों की भाषा –
सिर्फ यह प्रार्थना कि चूल्हा आज बोल उठे। दो जून की रोटी यहाँ संकल्प नहीं,संघर्ष है।
यहाँ उत्सव कैलेंडर से नहीं, जिंदा लौट आने से तय होता है।
नववर्ष भी हमारे लिए कोई नई त्वचा नहीं लाता। वही देह, वही छाले, वही कर्ज।
सुबह फिर हाथों में थमाए जाते हैं – धामा, कुदाल, बेलचा, छीनी, हथौड़ी।
और कहा जाता है – नववर्ष में, "देश आगे बढ़ रहा है।"
हाँ, बढ़ रहा है – हमारी पीठ पर खड़े होकर।

- सतीश शर्मा

गजल

सफलता का द्वार खोला जा रहा है,
मूर्ख को विद्वान बोला जा रहा है.
रख दिया ईमान को गिरवी सभी ने,
सज्जनों को क्योंकि छोला जा रहा है.
योग्य नेता की जरूरत आ पड़ी है,
जोकि चमचों में टटोला जा रहा है.
सूटकेस लिए हुए लौटेगा इक दिन,
वो जो दिल्ली ले के झोला जा रहा है.
भीड़ में वो आत्मा को छोड़ देगा,
भक्त का असहाय चोला जा रहा है.
योग्य लोग तमाम पैदल चल रहे हैं,
बीच में शाही हिंडोला जा रहा है.
साधुता पर सतत चोटें पड़ रही हैं,
आस्था में जहर घोला जा रहा है.

- रामेश्वर वैष्णव, रायपुर

उसकी पेंशन

रेवती को बीमार हुए पूरे दो साल हो गए हैं। बिस्तर में ही पड़ी रहती है। चल-फिर नहीं पाती है। डॉक्टरों का कहना है कि लकवे की वजह से अब वह कभी उठ नहीं पाएगी। आज रेवती की सहेली सत्यवती उससे मिलने आई है। रेवती की हालत देखकर उसे बहुत दुःख हुआ पर इस बात की तसल्ली हुई कि रेवती की दोनों बहुएं अपनी सास की सेवा में लगी रहती हैं। एक उसे नहलाती है तो दूसरी गर्मागर्म खाना खाने को देती है। समय पर दवाई वगैरह भी देती हैं।

सत्यवती ने रेवती की दोनों बहुओं से कहा –

धन्य हो बेटा, तुम लोग। बहुएं हो तो तुम लोगों जैसी, जो दिन-रात अपनी सास की सेवा में लगी रहती हो। वरना आजकल की बहुएं तो सास की तरफ देखती भी नहीं।

यह सुनकर छोटी बहू ने कहा, –

क्या करें मासी, मजबूरी है। अगर हम लोग अपनी सास की सेवा नहीं करेंगी तो वे जल्द ही इस दुनिया से चल बसेंगी और वे चल बसीं तो उनको मिलने वाली पेंशन के पूरे पन्द्रह हजार रुपये भी चले जाएंगे। बस, हम चाहते हैं कि हमारी सास लंबे समय तक जीवित रहें ताकि हमें उनकी पेंशन का पैसा मिलता रहे और घर का खर्च चलता रहे।

यह सुनकर सत्यवती आश्चर्य चकित रह गई। वह सोचने लगी कि उसे तो कोई पेंशन नहीं मिलती अगर वह बीमार पड़ जाए तो उसका क्या होगा? वह अपना भविष्य सोचकर चिंतित हो उठी।

-डॉ. शैल चंद्रा, नगरी

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

राष्ट्रपति सम्मान से गौरवान्वित अदम्य संघर्ष की कहानी

एक एक्सीडेंट और....इलेक्ट्रीशियन से चित्रकार बन गए कुरुद के बसंत साहू

◦ बसंत साहू की कहानी उन सभी के लिए प्रेरणा है, जो मामूली बातों पर जिंदगी से हार मान लेते है

छत्तीसगढ़ के कुरूद निवासी वरिष्ठ चित्रकार बसंत साहू को राष्ट्रपति के हाथों राष्ट्रीय सम्मान मिलना केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा का प्रतीक है। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा उन्हें 'दिव्यांगजन सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उस जुझारू संकल्प की पहचान है, जिसने असंभव को संभव कर दिखाया।

एक सड़क हादसा, जिसने शरीर रोका पर सपने नही

15 सितंबर 1995 को हुई भीषण सड़क दुर्घटना ने बसंत साहू के जीवन की दिशा बदल दी। रीढ़ की हड्डी में गंभीर चोट के कारण डॉक्टरों ने स्पष्ट कर दिया कि उनका 95 प्रतिशत शरीर अब काम नहीं करेगा। जीवन व्हीलचेयर तक सिमट गया, लेकिन उनके भीतर के सपने और आत्मबल कभी थमे नहीं।

बिस्तर पर देह, पर जागता हुआ मन

महीनों तक बिस्तर पर पड़े रहने के दौरान बसंत साहू दीवारों पर लगी तस्वीरों को देखते रहते थे। यहीं से उनके भीतर चित्रकारी की लौ जली। उन्होंने समझ लिया कि यदि शरीर साथ नहीं दे रहा, तो मन और कल्पना को तो उड़ान दी जा सकती है।

अभ्यास बना गुरु, आत्मविश्वास बना ताकत

बिना किसी प्रशिक्षण और गुरु के, बसंत साहू ने कागज और पेंसिल से शुरुआत की। रोज अभ्यास करते-करते टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं सजीव आकृतियों में बदलने लगीं। महात्मा गांधी का

पहला चित्र उनके आत्मविश्वास का आधार बना और यहीं से उनकी कला-यात्रा ने गति पकड़ी।

दाहिने हाथ, पट्टे में बंधा ब्रश, साधना में बदली कला

व्हीलचेयर पर बैठकर दाएं हाथ में पट्टा बांध ब्रश फंसाते हुए बसंत साहू चित्र बनाते हैं। एक-एक चित्र को पूरा करने में चार से पांच दिन लगते हैं। उनकी पेंटिंग्स केवल रंगों का संयोजन नहीं, बल्कि संघर्ष, संवेदना और संकल्प की सजीव अभिव्यक्ति हैं।

लोक संस्कृति से अंतरराष्ट्रीय पहचान तक

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, बस्तर आर्ट और प्रकृति उनकी कला के प्रमुख विषय हैं। उनकी कलाकृतियां देश-विदेश में सराही जा रही हैं और कई प्रतिष्ठित संस्थानों व सरकारी भवनों की शोभा बढ़ा रही हैं। अमेरिका और इंग्लैंड जैसे देशों तक उनकी कला ने छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया है।

कलाकार के साथ समाज का मार्गदर्शक

बसंत साहू बच्चों को चित्रकला का प्रशिक्षण देकर उन्हें रचनात्मकता की ओर प्रेरित कर रहे हैं। 'बसंत फाउंडेशन' के माध्यम से वे नई पीढ़ी को कला से जोड़ रहे हैं और कई विद्यार्थी आज कला विश्वविद्यालयों तक पहुंच चुके हैं।

मोबाइल से दूरी, सृजन से नजदीकी का संदेश

बसंत साहू आज के दौर में बच्चों और युवाओं को मोबाइल से दूरी बनाकर

सृजनात्मक कार्यों की ओर बढ़ने का संदेश देते हैं। उनका मानना है कि अत्यधिक मोबाइल उपयोग बच्चों को मानसिक रूप से कमजोर बना रहा है। उन्होंने इस सामाजिक चिंता को लेकर कई प्रभावशाली पेंटिंग्स भी बनाई हैं। वे कहते हैं कि पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों की छिपी प्रतिभा को पहचानना और उसे निखारना हर माता-पिता की जिम्मेदारी है।

राष्ट्रपति सम्मान : संघर्ष की सर्वोच्च पहचान

अंतरराष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस पर राष्ट्रपति के हाथों मिला राष्ट्रीय पुरस्कार बसंत साहू के तीन दशक लंबे संघर्ष, साधना और आत्मबल की सर्वोच्च स्वीकृति है। यह सम्मान बताता है कि दिव्यांगता कभी प्रतिभा की सीमा नहीं बन सकती।

हौसलों का जीवंत संदेश

बसंत साहू का जीवन यह सिखाता है कि दिव्यांगता शरीर में हो सकती है, मन में नहीं। वे उन सभी लोगों के लिए प्रेरणा हैं जो कठिन परिस्थितियों में हार मान लेते हैं। बसंत साहू का संदेश स्पष्ट है ष्जब तक जीवन है, तब तक संभावनाएं हैंय जरूरत है केवल हौसलों को टूटने न देने की।

जन-सरोकार

ट्रेन में सफर करने वालों को बड़ी राहत

ऑनलाइन टिकट बुक करने पर मिलेगी 3% की छूट

"रेलवे में अब टिकट के लिए लाइन लगने की झंझटों से छुटकारा मिल जाएगा. क्योंकि रेलवे ने पूरे देश में अपनी मोबाइल टिकटिंग व्यवस्था को शुरु करने जा रही है. इससे आम लोगों को लाइन न लगने के अलावा आर्थिक राहत भी मिलेगी. रेलवे ने मोबाइल एप को अनारक्षित और आरक्षित दोनों तरह की टिकट बुकिंग के लिए लागू करने जा रहा है."

रेलवे के अनुसार, वर्तमान में यात्रियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला यूटीएस (अनारक्षित टिकटिंग सिस्टम) एप को मार्च 2026 में बंद कर दिया जाएगा. ऐसे में यात्रियों को कोई परेशानी ना हो इसके लिए रेलवे ने एक ही प्लेटफॉर्म से अपनी सभी रेल सुविधाओं की सुविधा दी है. अगर आप भी "रेलवन" एप से चाहे आरक्षित या अनारक्षित दोनों में किसी प्रकार की टिकट बुकिंग करते हैं तो आपका समय और पैसा दोनों बचेगा.

टिकट बुकिंग पर कितनी मिलेगी छूट?

रेलवे ने यह कदम यात्रियों की सुविधा बढ़ाने के साथ-साथ डिजिटल टिकटिंग को बढ़ावा देने के लिए उठाया है. ताकि अब रेलवे स्टेशन या ऑनलाइन दुकानों के चक्कर न काटने पड़ें. इसके अलावा, रेलवे ने रेलवन एप से बुकिंग पर 3: किराए में छूट की भी घोषणा की है, जो यात्रियों के लिए 14 जनवरी 2026 से लागू होगा. रेलवे का प्रयास है कि ज्यादा से ज्यादा इस एप का इस्तेमाल करें. रेलवन एप की सबसे बड़ी खासियत है कि वह एक ही एप पर आरक्षित, अनारक्षित और प्लेटफॉर्म टिकट की बुकिंग, ट्रेन की लाइव लोकेशन, च्छत स्टेटस, कोच पोजिशन, भोजन बुकिंग, शिकायतध्सुझाव, पार्सल ट्रैकिंग जैसी सुविधाएं देता है.

क्या होगा फायदा?

- टिकट लेने के लिए खिड़की पर लाइन लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी.
- मोबाइल पर रामवन एप डाउनलोड कर आसानी से टिकट बुक किया जा सकेगा.
- एक ही प्लेटफॉर्म पर रेलवे की सारी जानकारी और सुविधा मिलेगी.
- आरक्षित और अनारक्षित दोनों प्रकार के टिकट बुक कर सकते हैं.
- किराए पर 3 प्रतिशत की छूट मिलेगी.

नशे पर प्रहार जरूरी, हत्या जैसी वारदातों से सुरक्षा पर सवाल !

खिलेश्वर शर्मा

- साल 2025 में रायपुर में कुल 15,896 एफआईआर दर्ज

"छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में देवेंद्र नगर थाना क्षेत्र में हुई चाकूबाजी और 29 वर्षीय युवक की नृशंस हत्या ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या राजधानी वास्तव में सुरक्षित है? शराब दुकान के पास खून से सनी लाश का मिलना केवल एक व्यक्ति की मौत नहीं, बल्कि राजधानी की कानून-व्यवस्था, सामाजिक संवेदनाओं और प्रशासनिक दावों की सामूहिक विफलता का प्रतीक है। साल 2025 में रायपुर में कुल 15,896 एफआईआर दर्ज हुईं। इनमें 92 हत्याएं, 543 चाकूबाजी और 280 बलात्कार शामिल हैं। अकेले खमतराई थाना क्षेत्र में 1,013 एफआईआर दर्ज किये गए है।"

ड्रग्स के खिलाफ 271 मामलों में 445 आरोपियों की गिरफ्तारी, 100 से अधिक को सजा, यातायात में 50 प्रतिशत अधिक ई-चालान ये आंकड़े कार्रवाई का संकेत देते हैं। संपत्ति से जुड़े अपराधों की बात करें तो चोरी, नकबजनी और बलवा जैसे मामलों में भी कमी देखी गई। वर्ष 2024 में दर्ज 1,497 चोरी के मामलों की तुलना में 2025 में यह संख्या घटकर 1,442 रह गई। नकबजनी के मामलों में भी गिरावट आई और 526 की जगह 473 प्रकरण दर्ज हुए। बलवा के मामलों में भी हल्की कमी दर्ज की गई। हालांकि धोखाधड़ी के मामलों में बढ़ोतरी देखी गई, जहां 2024 के 250 मामलों की तुलना में 2025 में 292 प्रकरण सामने आए।

नशे के अवैध कारोबार पर प्रहार

नशे के अवैध कारोबार के खिलाफ चलाए गए अभियानों का असर भी साफ नजर आया। वर्ष 2025 में नारकोटिक्स एक्ट के तहत 271 प्रकरण दर्ज कर 445 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के कब्जे से प्रतिबंधित मादक पदार्थ, वाहन, मोबाइल फोन और अन्य सामग्री जब्त की गई, जिसकी कुल कीमत करीब 2.78 करोड़ रुपये आंकी गई है। पुलिस कार्रवाई में यह भी सामने आया कि रायपुर में सक्रिय अपराधियों में कई दूसरे राज्यों के लोग शामिल थे। ओडिशा, बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के अलावा दो नाइजीरियाई नागरिकों को भी गिरफ्तार किया गया। वर्ष 2025 में गुण्डा और निगरानी बदमाशों पर भी शिकंजा कसा गया। जिला दंडाधिकारी के समक्ष 33 प्रकरण प्रस्तुत किए गए, जिनमें से 5 बदमाशों के खिलाफ जिला बदर की कार्वाई की गई।

जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता

- महिलाओं के लिए संवेदनशील इलाकों में 24×7 पुलिस पेट्रोलिंग।
- सार्वजनिक परिवहन और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में प्रभावी निगरानी।
- शराब दुकानों और नशे से जुड़े क्षेत्रों पर सख्त नियंत्रण।

प्राचीन विरासत बनेगी विश्व धरोहर

यूनेस्को टैग की ओर सिरपुर

◦ **सिरपुर विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण ने नामांकन प्रक्रिया को दी गति**

> "छत्तीसगढ़ का प्राचीन रत्न सिरपुर यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में प्रवेश करने को तैयार है। नए वर्ष में अंतिम स्वीकृति की मजबूत संभावना है, जो राज्य को पहला विश्व धरोहर स्थल प्रदान करेगा।"

छठी शताब्दी से बहुधार्मिक शहरी केंद्र के रूप में प्रसिद्ध सिरपुर में बौद्ध, जैन, हिंदू और शैव-वैष्णव परंपराएं एक साथ विकसित हुईं। यहां लक्ष्मण मंदिर, बुद्ध विहार, प्राचीन आवासीय परिसर, बाजार और नदी घाटों सहित 125 से अधिक खुदाई स्थल मौजूद हैं, जिन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और राज्य पुरातत्व विभाग ने संयुक्त रूप से दस्तावेजित किया है। यूनेस्को टैग के लिए आवश्यक अंतर्राष्ट्रीय मानकों सुरक्षा, प्रस्तुति और आगंतुक प्रबंधन को पूरा करने हेतु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और राज्य पर्यटन एजेंसियों ने सिरपुर का विस्तृत निरीक्षण पूरा कर लिया है। यह रिपोर्ट केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय को प्रस्ताव को मजबूत बनाने के लिए भेजा गया है, जिसमें नवंबर 2025 तक सिरपुर विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण की रिपोर्ट शामिल है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का यह स्थान देश में स्थित 140 केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों में से एक है, जिसके संरक्षण के लिए यहां के पुरासंपदा का रखरखाव हो सके इसके लिए भारत सरकार व राज्य सरकार मिलकर काम कर रहे हैं। इस क्षेत्र की और इस जगह की जितनी महत्ता है, उसके अनुरूप अभी यहां पर्यटन विकास की बहुत अधिक संभावनाएं हैं। छत्तीसगढ़ की पहचान एक समृद्ध, ऐतिहासिक विरासत, प्राकृतिक संपदा वाले प्रदेश के रूप में बन रही है। आने वाले समय में छत्तीसगढ़ पर्यटन गतिविधियों का केन्द्र बने इस दृष्टिकोण से सिरपुर बहुत महत्वपूर्ण है। केन्द्रीय पर्यटन मंत्री का यह दौरा राज्य सरकार की रिपोर्ट को मजबूत करता है, क्योंकि सिरपुर 140 संरक्षित स्मारकों में शुमार है।

जानें यूनेस्को मान्यता से क्या होगा लाभ

सिरपुर छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक आत्मा है। यूनेस्को मान्यता से वैश्विक पहचान मिलेगी, पर्यटन बढ़ेगा और स्थानीय युवाओं के लिए हजारों रोजगार सृजित होंगे। सिरपुर विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ 125 खुदाई स्थलों का मास्टर प्लान तैयार किया। इसमें लक्ष्मण मंदिर, आनंद प्रभु कुटी विहार, तीवरदेव विहार, सुरंग टीला, गंधेश्वर मंदिर सहित प्रमुख साइटें शामिल हैं। नवंबर 2025 की रिपोर्ट केंद्रीय मंत्रालय पहुंच चुकी है, दिसंबर में अंतिम समीक्षा हुई। सिरपुर को वैश्विक पर्यटन हब बनाएंगे। बैटरी ई-कार्ट, 3डी इंटरप्रेटेशन सेंटर, होमस्टे क्लस्टर, हेरिटेज शटल और गाइडेड वॉक शुरू हो रहे

हैं। चार हेरिटेज सर्किट, बौद्ध विहारों से लक्ष्मण मंदिर तक जोड़ेंगे। सड़क उन्नयन, डिजिटल साइनेज, स्वच्छता और सर्किट मैनेजमेंट पर कार्य किया जा रहा है । स्थानीय लाभ के लिए गाइड ट्रेनिंग, हस्तशिल्प बाजार और ईको-फ्रेंडली स्टे पर जोर दिया जाएगा।

लक्ष्मण मंदिर सिरपुर का सबसे प्रसिद्ध हिंदू मंदिर

उल्लेखनीय है कि सिरपुर दक्षिण कोसल की राजधानी थी। लक्ष्मण मंदिर सिरपुर का सबसे प्रसिद्ध और पुरातन हिंदू मंदिर है, जो 6वीं-7वीं सदी में बनाया गया था। यह भगवान विष्णु को समर्पित है और प्रमुख रूप से लाल ईंटों से निर्मित है। रानी वासटादेवी ने इसे अपने पति राजा हर्षगुप्त की स्मृति में बनवाया था इसे एक प्रेम कथा का प्रतीक भी माना जाता है। तिवरदेव विहार एक प्राचीन बौद्ध विहार है, जो 7वीं-8वीं सदी का बताया जाता है। यह बड़े पैमाने पर ईंटों का बना हुआ था और खुदाई में इसका अवशेष मिला है। बौद्ध संप्रदाय से जुड़ा यह विहार सिरपुर में बुद्ध के अनुयायियों द्वारा ध्यान, शिक्षा और धार्मिक क्रियाओं के लिए उपयोग में लाया गया था। आनंद प्रभु कुटी विहार सिरपुर का एक प्रमुख बौद्ध स्थल है, जिसे भिक्षु आनंद प्रभु द्वारा स्थापित किया गया था। यह विहार 14 कमरे वाला एक बड़ा बौद्ध मठ है, जिसमें एक मुख्य प्रवेश द्वार और सुंदर नक्काशीदार स्तंभ पाए गए हैं। यहां बुद्ध की एक विशाल मूर्ति और अन्य बौद्ध प्रतिमाएँ मिलती हैं। सुरंग टीला सिरपुर का एक अनोखा पुरातात्विक स्थल है, जिसमें प्राचीन काल के मंदिर के अवशेष मिले हैं। यह 7वीं सदी का मंदिर था, जिसमें 5 गर्भगृह पाए गए हैं। इन गर्भगृहों में शिवलिंग और गणेश की प्रतिमा स्थित है, जो इस धार्मिक स्थल की विविधता को दर्शाता है।

44 विश्व धरोहरों में होगा छत्तीसगढ़ का सिरपुर

यह हिंदू - बौद्ध-जैन का दुर्लभ मिश्रण है जिसकी तुलना अंगकोरवाट या बोधगया से किया जा सकता है। संयुक्त सांस्कृतिक - प्राकृतिक श्रेणी में भारत के 44 विश्व धरोहरों में छत्तीसगढ़ का प्रवेश सिरपुर से होगा। यूनेस्को टैग से वैश्विक फंडिंग, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दस हजार से अधिक रोजगार और 500 करोड़ का पर्यटन राजस्व संभावित है। उल्लेखनीय है कि सिरपुर का प्राचीन नाम श्रीपुरश्रिपुरा है जो महानदी के तट पर बसी एक प्राचीन नगरी है, जिसका इतिहास 5वीं से 12वीं सदी तक फैला हुआ है। यह दक्षिण कोसल का प्रमुख राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है और यहां हिंदू, बौद्ध व जैन तीनों धर्मों के तीर्थ, मठ, मंदिर और विहारों का दुर्लभ संग्रह मिलता है। खुदाई में यहां 22 शिव मंदिर, 5 विष्णु मंदिर, 10 बुद्ध विहार और 3 जैन विहार के अवशेष मिले हैं।

जनजातीय इतिहास की अमूल्य धरोहर

कर्तव्य पथ पर दिखेगा छत्तीसगढ़ का गौरव

- गणतंत्र दिवस पर चयनित हुई छत्तीसगढ़ की झांकी
- देश के पहले डिजिटल जनजातीय वीर नायक संग्रहालय की होगी प्रस्तुति

> "गणतंत्र दिवस समारोह में दिल्ली के कर्तव्य पथ पर छत्तीसगढ़ की झांकी देश की सांस्कृतिक चेतना और जनजातीय गौरव का सशक्त प्रतीक बनकर उभरेगी। रक्षा मंत्रालय की विशेषज्ञ समिति ने चार महीने की कड़ी चयन प्रक्रिया के बाद छत्तीसगढ़ की विशिष्ट झांकी को मुख्य समारोह के लिए चयनित किया है। इस झांकी के माध्यम से देशवासियों को जनजातीय वीर नायकों को समर्पित देश के पहले डिजिटल संग्रहालय की झलक देखने को मिलेगी, जो इतिहास, तकनीक और राष्ट्रभक्ति का अद्भुत संगम है।"

जनजातीय शौर्य और बलिदान को राष्ट्रीय मंच

छत्तीसगढ़ की झांकी आदिवासी समाज के उन वीर नायकों को नमन करती है, जिन्होंने स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर किए। आधुनिक डिजिटल तकनीक के माध्यम से उनकी संघर्षगाथाएं जीवंत रूप में प्रस्तुत की जाएंगी, जिससे नई पीढ़ी देश के इस गौरवशाली अध्याय से जुड़ सकेगी।

प्रधानमंत्री द्वारा लोकार्पित संग्रहालय की झलक

उल्लेखनीय है कि इस डिजिटल संग्रहालय का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना की रजत जयंती के अवसर पर नवा रायपुर अटल नगर में किया था। अब उसी संग्रहालय की संकल्पना गणतंत्र दिवस की झांकी के जरिए पूरे देश के सामने प्रस्तुत होगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का गौरवपूर्ण संदेश

झांकी के चयन पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा "छत्तीसगढ़

की झांकी के माध्यम से आदिवासी समाज की देशभक्ति, अदम्य साहस और सिद्धांतों के लिए बलिदान की परंपरा पूरे देश के सामने आएगी। यह छत्तीसगढ़ के लिए अत्यंत गर्व और उत्साह का क्षण है।"

सभी राज्यों से आए प्रस्ताव, छत्तीसगढ़ का हुआ चयन

जनसंपर्क विभाग के सचिव रोहित यादव ने बताया कि गणतंत्र दिवस झांकी के लिए सभी राज्यों से प्रस्ताव आमंत्रित किए गए थे। लगभग चार महीने चली गहन समीक्षा के बाद 17 राज्यों की झांकियों को अंतिम सूची में स्थान मिला, जिसमें छत्तीसगढ़ भी शामिल है। विशेषज्ञ समिति ने झांकी की विषयवस्तु, नवाचार और डिजाइन की विशेष सराहना की।

'स्वतंत्रता का मंत्र - वंदे मातरम्' थीम पर आधारित

जनसंपर्क आयुक्त डॉ. रवि मित्तल ने जानकारी दी कि छत्तीसगढ़ की झांकी भारत सरकार की थीम 'स्वतंत्रता का मंत्र – वंदे मातरम्' पर आधारित है। झांकी में जनजातीय विद्रोहों, एकजुटता, शौर्य और स्वतंत्रता के प्रति समर्पण को अत्याधुनिक डिजिटल प्रस्तुति के माध्यम से दर्शाया गया है।

पांच चरणों की कठिन प्रक्रिया के बाद मिली अंतिम मंजूरी

झांकी की थीम और डिजाइन को पांच चरणों की कठिन चयन प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। विशेषज्ञ समिति के समक्ष पहले संकल्पना प्रस्तुत की गई, फिर थ्री–डी मॉडल, संगीत और –श्य प्रभावों का सूक्ष्म परीक्षण हुआ। सभी मानकों पर खरा उतरने के बाद रक्षा मंत्रालय ने झांकी को अंतिम स्वीकृति दी।

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय पहचान

कर्तव्य पथ पर प्रदर्शित होने वाली यह झांकी न केवल छत्तीसगढ़ की समृद्ध जनजातीय परंपरा को राष्ट्रीय पहचान देगी, बल्कि यह संदेश भी देगी कि भारत की आजादी और एकता में आदिवासी समाज का योगदान अमूल्य और अविस्मरणीय है। यह झांकी छत्तीसगढ़ का गौरव, जनजातीय अस्मिता का सम्मान और आधुनिक भारत की सांस्कृतिक शक्ति का सजीव प्रतीक बनेगी।

साय शासन मॉडल

ग्राउंड से ग्रोथ तक : जहां फैसले उतरते हैं जमीन पर

- महतारी वंदन योजनाः महिलाओं को प्रतिमाह ₹1,000 वित्तीय सहायता सीधे बैंक खाते में, लगभग 70 लाख महिलाओं तक लाभ पहुंचा।
- श्री रामलला दर्शन योजना रू 38 हजार से ज्यादा राज्यवासियों को मुफ्त आयोध्या तीर्थ यात्रा का अवसर।
- राशन और खाद्यान्न सहायता रू राज्य में 73 लाख गरीब परिवारों को निशुल्क राशन की व्यवस्था जारी।
- हाफ बिजली बिल रू 200 यूनिट तक घरेलू बिजली बिल में 50ः छूट
- कृषक उन्नति योजना रू धान की खरीद ₹3,100 प्रति क्विंटल एवं 21 क्विंटल प्रति एकड़ तक धान खरीदी
- प्रधानमंत्री आवास योजना रू लगभग 18 लाख घरों को स्वीकृति
- औद्योगिक विकास, निवेश और रोजगारः लगभग 8 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव

1 नवंबर 2000 को भारत के मानचित्र पर छत्तीसगढ़ एक नए राज्य के रूप में उभरा। मध्यप्रदेश से पृथक होकर बने इस राज्य ने 25 वर्षों की यात्रा में न केवल अपनी पहचान गढ़ी, बल्कि विकास, सामाजिक न्याय और सुशासन के कई नए प्रतिमान भी स्थापित किए। प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर, आदिवासी संस्कृति से समृद्ध और कृषि प्रधान छत्तीसगढ़ की यह यात्रा चुनौतियों से शुरू होकर आत्मविश्वास और उपलब्धियों तक पहुँची है।

राज्य गठन और प्रारंभिक चुनौतियाँ

राज्य गठन के समय छत्तीसगढ़ के सामने अनेक समस्याएँ थीं, कमजोर अधोसंरचना, सीमित औद्योगिक आधार, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी तथा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की चुनौती। ग्रामीण और आदिवासी बहुल अंचलों में सड़क, बिजली, पानी और प्रशासनिक पहुंच का अभाव स्पष्ट था। ऐसे में शुरुआती वर्षों में सरकार का प्रमुख लक्ष्य मजबूत प्रशासनिक ढांचा खड़ा करना और बुनियादी सुविधाओं का विस्तार रहा। नई राजधानी नवा रायपुर (अटल नगर) की परिकल्पना, जिलों और तहसीलों का पुनर्गठन, पंचायत और नगरीय निकायों को सशक्त बनाना, इन प्रयासों ने विकास की नींव रखी। विकेंद्रीकरण के माध्यम से योजनाओं को गांव-गांव तक पहुंचाया गया।

कृषिः छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था की रीढ़

छत्तीसगढ़ को "धान का कटोरा" कहा जाता है और कृषि राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। पिछले 25 वर्षों में सिंचाई परियोजनाओं का विस्तार, उन्नत बीज, कृषि यंत्रीकरण और किसान हितैषी नीतियों ने खेती को अधिक उत्पादक और लाभकारी बनाया। समर्थन मूल्य पर धान खरीदी, डिजिटल पंजीकरण और समय पर भुगतान जैसी व्यवस्थाओं ने किसानों को आर्थिक सुरक्षा दी। इससे न केवल किसान की आय बढ़ी, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिली। आज छत्तीसगढ़ की धान खरीदी व्यवस्था देशभर में एक मॉडल के रूप में देखी जाती है।

आदिवासी विकास और सामाजिक न्याय

छत्तीसगढ़ की आत्मा उसके आदिवासी समाज में बसती है। राज्य गठन के बाद अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष प्रयास किए गए। वन अधिकार अधिनियम के तहत पट्टों का वितरण, छात्रावास और छात्रवृत्ति योजनाएं, स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रम-इन सबने सामाजिक न्याय को मजबूत किया। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका ऐतिहासिक रही है। लाखों ग्रामीण महिलाएं आज आर्थिक गतिविधियों से जुड़कर आत्मनिर्भर बनी हैं और ग्रामीण विकास की धुरी बन चुकी हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य में परिवर्तन

शिक्षा के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ ने उल्लेखनीय प्रगति की है। नए प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय, कॉलेज, आईटीआई और विश्वविद्यालय स्तापित हुए। नवोदय,

एकलव्य और आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूलों ने ग्रामीण और वंचित वर्ग के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अवसर दिया। स्वास्थ्य सेवाओं में भी बड़ा बदलाव देखने को मिला। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से लेकर जिला अस्पताल और मेडिकल कॉलेजों तक सुविधाओं का विस्तार हुआ। मातृ-शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, कुपोषण उन्मूलन और आपातकालीन सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया गया।

औद्योगिक विकास और अधोसंरचना

खनिज संपदा से समृद्ध छत्तीसगढ़ ने औद्योगिक क्षेत्र में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। इस्पात, बिजली, सीमेंट और एल्युमिनियम उद्योगों ने राज्य की आर्थिक ताकत बढ़ाई। साथ ही एमएसएमई, फूड प्रोसेसिंग और आईटी जैसे नए क्षेत्रों को भी प्रोत्साहन मिला। सड़क, रेलवे, बिजली और डिजिटल कनेक्टिविटी के विस्तार ने विकास को गति दी। गांव-गांव तक बिजली और सड़क पहुंचने से शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यापार को नया आधार मिला।

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास की रोशनी

नक्सलवाद छत्तीसगढ़ की सबसे जटिल चुनौतियों में से एक रहा है। लेकिन सुरक्षा उपायों के साथ-साथ विकास को प्राथमिक हथियार बनाकर सरकार ने बड़ा बदलाव किया। सड़कों, मोबाइल नेटवर्क, स्कूलों और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार ने उन क्षेत्रों में भी उम्मीद जगाई, जहां कभी भय का माहौल था। विकास और संवाद ने शांति की राह खोली।

सुशासन, तकनीक और पारदर्शिता

पिछले 25 वर्षों में छत्तीसगढ़ ने सुशासन की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए। ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन सेवाएं, जनदर्शन और समयबद्ध सेवा गारंटी जैसी पहलों ने प्रशासन को जनता के करीब लाया। पारदर्शिता और जवाबदेही से योजनाओं का वास्तविक लाभ लोगों तक पहुंचा।

सांस्कृतिक पहचान और छत्तीसगढ़ी अस्मिता

छत्तीसगढ़ की लोककला, नृत्य, संगीत, तीज-त्योहार और भाषा को राज्य स्तर पर संरक्षण और प्रोत्साहन मिला। यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण विकास के साथ-साथ पहचान और गर्व

का प्रतीक बना। राज्य ने यह सिद्ध किया कि आधुनिकता और परंपरा साथ-साथ चल सकती हैं।

युवा, रोजगार और भविष्य की दिशा

आज का छत्तीसगढ़ युवा राज्य है। कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा और स्वरोजगार योजनाओं ने युवाओं को नए अवसर दिए हैं। स्टार्टअप, डिजिटल सेवाएं और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में संभावनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। आने वाले वर्षों में छत्तीसगढ़ ज्ञान, तकनीक और सतत विकास के नए केंद्र के रूप में उभर सकता है। छत्तीसगढ़ के 25 वर्ष केवल समय की गणना नहीं, बल्कि एक परिवर्तनकारी यात्रा हैं, जहां संघर्ष से संकल्प और संकल्प से सफलता की कहानी लिखी गई। यह विकास केवल इमारतों, सड़कों और आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि किसान की समृद्धि, आदिवासी के अधिकार, महिला की आत्मनिर्भरता और युवा के सपनों में दिखाई देता है। रजत जयंती के इस पड़ाव पर छत्तीसगढ़ आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर देख रहा है। एक ऐसा भविष्य, जो समावेशी, टिकाऊ और उज्ज्वल है। यही 25 वर्षों की सबसे बड़ी उपलब्धि और आने वाले कल की सबसे मजबूत नींव है।

खाते में पहुंची राशि, सशक्त हो रही महिलाएं

राज्य में सस्टेनबल डेवलपमेंट गोल को हासिल करने के लिए सामाजिक, आर्थिक गतिशीलता के लिए शुरू की गई कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। जल जीवन मिशन के अंतर्गत 40 लाख घरों में पीने का स्वच्छ जल मुहैया कराया जा रहा है। इसी प्रकार 26 लाख से अधिक परिवारों के लिए पीएम आवास स्वीकृत किए गए हैं। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने

और समाज में उनकी भूमिका बढ़ाने के लिए महतारी वंदन योजना में 70 लाख से अधिक महिलाओं के बैंक खाते में एक-एक हजार रूपए की राशि दी जा रही है। इस योजना के अंतर्गत लगभग 14 हजार करोड़ रूपए की राशि जारी की जा चुकी है। आयुष्मान भारत योजना के दायरे में राज्य की 98 प्रतिशत आबादी को लाया जा चुका है।

69 सुरक्षा कैम्पों के माध्यम से मूलभूत सुविधाएं पहुंची

नियद नेल्ला नार योजना के अंतर्गत माओवाद आतंक से प्रभावित क्षेत्रों में स्थापित 69 सुरक्षा कैम्पों के माध्यम से मूलभूत सुविधाओं के साथ ही केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। बस्तर की बदलती फिजा को सबके सामने लाने में बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम जैसे बड़े आयोजनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बस्तर के युवा अब विकास से जुड़ना चाहते है, इसकी बानगी यहां चलाए जा रहे हैं। स्किल डेवलपमेंट कार्यक्रमों में देखी जा सकती है। बस्तर की युवाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए और उन्हें रोजगार से जोड़ने के लिए पर्यटन ऑटोमोबाईल, पायलट, आईटी आदि क्षेत्रों में स्किल डेवलपमेंट के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

छतीसगढ़ सरकार के बड़े फैसले

- प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत स्थायी प्रतीक्षा सूची के पात्र शेष परिवारों (6,99,439) एवं आवास प्लस सूची के पात्र परिवारों (8,19,999) की स्वीकृति, निर्माणाधीन 2,46,215 आवासों को भी शीघ्र पूर्ण कराया जायेगा। राज्य में प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के अंतर्गत कुल 17,65,653 आवास एवं अन्य 47,090 आवास कुल 18,12,743 जरुरतमंद पात्र परिवारों को तत्परता से स्वीकृति देने के साथ ही आवश्यक धनराशि उपलब्ध करायी जायेगी।
- पर्यटन को उद्योग का दर्जा – मंत्रिपरिषद की बैठक में राज्य में पर्यटन को बढ़ावा तथा योजनाबद्ध विकास के लिए छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग के प्रस्ताव पर राज्य में पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान करने का निर्णय लिया गया।
- अमृतकाल: छत्तीसगढ़ विजन/2047 विजन डॉक्यूमेंट के प्रारूप का अनुमोदन किया गया।

० छत्तीसगढ़ के तकनीकी शिक्षा विभाग में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने का निर्णय लिया है। इससे छात्र-छात्राओं को समग्र एवं लचीले शिक्षा प्रणाली के साथ ही गुणवत्तायुक्त शिक्षण की सुविधा मिलेगी। शोध और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अधिक संसाधन और सहयोग प्राप्त होंगे। उद्योगों को अधिक कुशल कार्य बल मिलेगा।

० राज्य में गठित पांचों विकास प्राधिकरणों के पुनर्गठन आदेश में आंशिक रूप से संशोधन की मंजूरी दी है। इस संशोधन से पांचों प्राधिकरणों में जनप्रतिनिधित्व का दायरा काफी विस्तृत किया गया है। पांचों प्राधिकरणों में अब राज्य मंत्रिमण्डल के सभी मंत्रीगणों को सदस्य के रूप में शामिल करने के साथ ही संबंधित क्षेत्र के राज्यसभा, लोकसभा के सांसद एवं प्राधिकरण क्षेत्रों के जिला पंचायत अध्यक्षों को अब इसका सदस्य बनाया गया है।

० गुरूघासीदास-तमोर पिंगला टायगर रिजर्व गठित करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

० राज्य के किसानों के हित में एक बड़ा फैसला लेते हुए खरीफ 2023-24 से "कृषक उन्नति योजना" लागू करने का निर्णय लिया गया।

० छत्तीसगढ़ राज्य में आतंकवाद, नक्सलवाद, वामपंथी उग्रवादी जैसे विशेष मामलों, प्रकरणों में त्वरित एवं प्रभावी अनुसंधान एवं अभियोजन के लिए राज्य इनवेस्टिगेशन एजेंसी (एस.आई.ए.) के गठन का निर्णय लिया गया।

० राजिम माघी पुन्नी मेला के स्थान पर राजिम कुंभ (कल्प) मेला आयोजित करने का फेसला।

० आगामी पांच वर्ष तक निःशुल्क खाद्यान्न वितरण का निर्णय, इससे राज्य के 67 लाख 92 हजार 153 राशनकार्डधारी परिवार लाभन्वित होंगे, आगामी 5 सालों तक राशन दुकानों से निःशुल्क चावल मिलेगा।

० किसानों से 21 क्विंटल धान खरीदी का वायदा पूरा हो गया है। धान खरीदी का यह वायदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी में भी शामिल रहा है।

० छत्तीसगढ़वासियों को दी गई गारंटियों में से एक और गारंटी को पूरा करते हुए प्रदेश में श्री रामलला दर्शन (अयोध्या धाम) योजना शुरू करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

० तेंदूपत्ता संग्राहक परिवारों से 5500 रुपये प्रति मानक बोरा की दर से तेंदूपत्ता खरीदने के लिए वर्ष 2026 हेतु ऋण लेने के लिए राज्य शासन की गारंटी देने की अनुमति।

० आत्मसमर्पित नक्सलियों के विरुद्ध दर्ज प्रकरणों की समीक्षा एवं परीक्षण के लिए, जिन्हें न्यायालय से वापस लिया जाना है, मंत्रिपरिषद उप समिति के गठन को स्वीकृति दी है। यह समिति परीक्षण उपरांत प्रकरणों को मंत्रिपरिषद के समक्ष प्रस्तुत करेगी।

० मुख्यमंत्री ऊर्जा राहत जन अभियान (M-URJA)-राज्य के घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को बिजली बिल में राहत देने के लिए मुख्यमंत्री ऊर्जा राहत जन अभियान राज्य में 01 दिसम्बर 2025 से लागू है, जिसके तहत घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को 100 यूनिट से बढ़ाकर अब 200 यूनिट प्रति माह तक बिजली बिल में 50 प्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा। यह लाभ 400 यूनिट तक खपत वाले उपभोक्ताओं को भी मिलेगा।

० ईडब्ल्यूएस एवं एलआईजी भवनों, फ्लैटों के विक्रय हेतु 03 बार विज्ञापन होने के पश्चात अविक्रित भवनों को, पात्र हितग्राही के अतिरिक्त किसी भी आय वर्ग के हितग्राही को विक्रय किया जा सकता है, परन्तु ऐसे हितग्राहियों को शासन द्वारा स्वीकृत अनुदान की पात्रता नही होगी। अनुदान की पात्रता केवल निर्धारित आय वर्ग के हितग्राही को ही होगी।

० बम विस्फोट की घटना में शहीद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आकाश राव गिरेपूंजे की शहादत और अदम्य वीरता को सम्मानित करते हुए उनकी पत्नी स्नेहा गिरेपूंजे को विशेष प्रकरण मानते हुए राज्य पुलिस सेवा में उप पुलिस अधीक्षक के पद पर अनुकंपा नियुक्ति देने का महत्वपूर्ण निर्णय।

० मीडिया कर्मियों को दी जाने वाली सम्मान राशि 10 हजार रूपए प्रतिमाह से बढ़ाकर 20 हजार रूपए प्रतिमाह करने का महत्वपूर्ण निर्णय।

० पुराने वाहन के फैंसी या च्वाइस नंबर को नए या किसी अन्य राज्य से लाए गए उसी श्रेणी के वाहन में उपयोग कर सकेंगे, इसके लिए आवश्यक शुल्क का भुगतान करना होगा।

० छत्तीसगढ राज्य के सुदूर अनुसूचित एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जहां यात्री परिवहन की सुविधा कम है, वहां आम जनता को सुलभ परिवहन सेवा उपलब्ध कराने के लिए "मुख्यमंत्री ग्रामीण बस सुविधा योजना" शुरू।

कविता से सत्ता तक: अटल बिहारी वाजपेयी का राष्ट्रबोध

प्रो. डॉ. अनुसुइया अग्रवाल

> "पत्थरों में भी अपनी रचनाओं से जान फूंकने वाले विलक्षण काव्य शिल्पी का नाम अटल बिहारी वाजपेयी है। शब्दों के माध्यम से सत्ता की नींद में कंपन वाले निर्भीक आलोचक, कर्मठ पत्रकार, राष्ट्र भक्त तथा जन जन में राष्ट्रीयता की चेतना भरने वाले कवित्व के चतुर चितेरे अटल बिहारी वाजपेयी भारत के सच्चे सपूत थे। तीखे राजनीतिक चेतना, मानवीय संवेदना, बोलचाल की भाषा का कुशल प्रयोग कवि के काव्य की विशेषता थी। जीवन की जटिलताओं को संवेदनशीलता के साथ उजागर कर आम जन-जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं।"

उनकी कविताओं का मूल स्वर भारत के प्रति समर्पण और अस्मिता जागरण है। पत्रकार होने के नाते राजनीति के विकृत, भ्रष्ट और क्रूर रूप को उजागर कर राजनीति की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य उनकी 'मेरी 51कविताएं' में स्पष्ट देखा जा सकता है। लोकतांत्रिक मूल्य यथा सहिष्णुता, बहुलवाद और नागरिक अधिकारों का व्यापक प्रसार उनकी कविताओं में देखा जा सकता है। शांति के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति है और ये उनकी व्यथा को गहराई से अपनी रचनाओं में चित्रित करते हैं। छोटे-छोटे लोगों यानी लघु की महत्ता को स्वीकार करते हैं। सपाट बयानी और सहज भाषा के लिए जाने जाते हैं। यदि कहें कि उनकी भाषा सहज और बोलचाल की भाषा है, तो उचित होगा। उन्होंने पत्रकारिता और साहित्यिक भाषा की बीच के पुल को पाट दिया है।

भारत की आराधना करते हुए वे लिखते हैं कि 'भारत कोई भूमि का टुकड़ा नहीं है, ये जीता जागता राष्ट्र पुरुष है। भारत वंदन की धरती है, अभिनंदन की धरती है, अर्पण की भूमि है, तर्पण की भूमि है। इसका नदी-नदी हमारे लिए गंगा है, इसका कण-कण हमारे लिए शंकर है। हम जियेंगे तो इसके लिए और मरेंगे तो इसके लिए और मरने के बाद भी यदि कोई हमारी अस्थियों को कान लगाकर सुनेगा तो एक ही आवाज आएगी भारत माता की जय।' यह एक आम आदमी का नारा नहीं बल्कि अटल जी के बेमिसाल जो उन्होंने संसद में कहे थे। इसके शब्द-शब्द हर भारतीय को आज भी प्रेरणा देने का कार्य करते हैं।

लगातार तीन बार प्रधानमंत्री के रूप में जिस गरिमापूर्ण व्यक्तित्व ने भारत को शीर्ष स्थान पर विराजमान होकर अपने कुशल नेतृत्व से भारत का प्रशासनिक बागडोर संभाला वे पद्म विभूषण भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी अपने नाम से जाने जाते हैं। वे 16 मई 1996 से 1 जून 1996 तक कुल 13 दिनों के लिए पहली बार प्रधानमंत्री रहे। बाद में 19 मार्च 1998 से 13.10.99 तक दूसरी तथा

अंतिम तीसरी बार 13.10.99 से 22 मई 2004 तक भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने लोकप्रियता प्राप्त की।

वे हिंदी के जाने-माने कवि, पत्रकार, प्रखर वक्ता, पेशे से राजनेता और राजनायिक दूत थे। वे 'राष्ट्र धर्म', 'पांचजन्य' और 'वीर अर्जुन' जैसे राष्ट्रवादी भावनाओं से ओत-प्रोत पत्रिकाओं के सफल संपादक भी रहे हैं। 2009 में स्वास्थ्य कारणों से जब सक्रिय राजनीति से संन्यासित हुए तब भी बला की राजधर्मिता और भीतर का कवि ऊर्जा से परिपूर्ण था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेकर राजनीतिक सफर प्रारंभ करने वाले वाजपेयी जी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन यानी राजग के पहले प्रधानमंत्री के रूप में बिना किसी समस्या के 5 वर्ष तक, गैर कांग्रेसी के रूप में अपनी सेवाएं देते रहे। क्योंकि आजीवन ब्रह्चर्य धर्म का पालन किया लिहाजा भीष्म पितामह के नाम से विश्व प्रसिद्ध हुए। इन्होंने पोखरण में पांच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को सु-ढ़ वैश्विक शक्ति एवं परमाणु शक्ति संपन्न देश के रूप में विश्व मानचित्र पर स्थापित कर दिया। उनके कार्यकाल में भारत ने आर्थिक विकास की ऊंचाइयों को स्पर्श किया।

अटल बिहारी वाजपेयी एक ऐसे प्रधानमंत्री थे जो हमेशा पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंधों की वकालत करते थे। उन्होंने पाकिस्तान की यात्रा करके भारत पाक के आपसी रिश्तों और संबंधों को एक नई दिशा दी। ...तब 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक की बस सेवा भी इन्होंने शुरू कराई और स्वयं प्रथम यात्री के रूप में नवाज शरीफ से भेंट करने के लिए भी गए किंतु कारगिल युद्ध के समय पाकिस्तान के विश्वासघात के कारण भारत के जान माल का काफी नुकसान हुआ। दरअसल पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना और उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया परंतु अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन किए बिना अंतरराष्ट्रीय सलाह का सम्मान किया और धैर्य पूर्वक किंतु कठोर कार्यवाही करते हुए भारत के क्षेत्र को आजाद कराया।

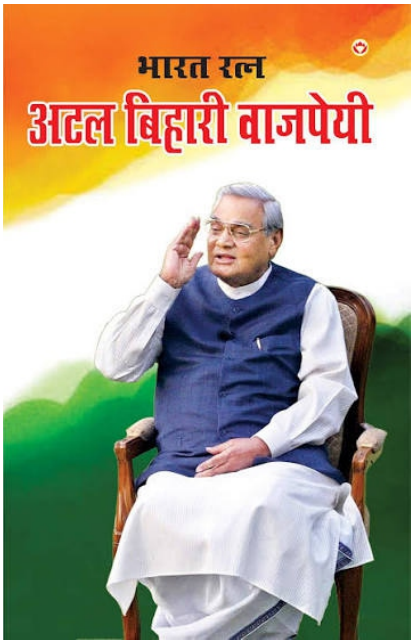

इसके अतिरिक्त स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना की शुरुआत, कावेरी जल विवाद का निपटारा, केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग का गठन, राष्ट्रीय राजमार्ग एवं हवाई अड्डों का विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, आर्थिक सलाह समिति, व्यापार एवं उद्योग समिति का गठन, उड़ीसा के सर्वाधिक गरीब क्षेत्र के लिए 7 सूत्रीय गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम की शुरुआत, अर्बन सीलिंग एक्ट का समप्तीकरण, सरकारी खर्चे पर इफ्तार अंकुश जैसे कठिन कार्यों की शुरुआत भी इनके कार्यकाल में हुआ।

उनके द्वारा किए गए अतुलनीय कार्यों की सराहना आज भी होती है। एक सफल नेतृत्वकर्ता और कुशल राजनेता के रूप में उनकी बेदाग छवि आज के सभी नौसिखिए राजनेताओं के लिए आदर्श है। वे सिर्फ शब्दों के शिल्पकार नहीं थे अपितु बुनियादी रूप से विदेश नीति के शिल्पकार भी थे। भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत और संकल्प का पालन करने वाले एक समावेशी व्यक्तित्व के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी जी को युगों-युगों तक जमाना याद करेगा।

प्रो. (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल डी.लिट.
वरिष्ठ साहित्यकार, प्राचार्य
स्वामी आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी माध्यम
आदर्श महाविद्यालय महासमुंद
जिला - महासमुंद (छ.ग.)
मो. नं. - 9425515019
ई-मेल-agrawaldransuya@gmail-com

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

चीन को पछाड़कर रचा इतिहास

चावल उत्पादन में भारत नंबर-1

◦ किसानों की अथक मेहनत का दिखा परिणाम

"भारत ने कृषि क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज करते हुए चावल उत्पादन में वैश्विक नेतृत्व हासिल कर लिया है। चीन को पीछे छोड़ते हुए भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश बन गया है। यह जानकारी केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने साझा करते हुए इसे भारतीय कृषि अनुसंधान, उन्नत बीज तकनीक और किसानों की अथक मेहनत का परिणाम बताया।"

भारत का चावल उत्पादन 150.18 मिलियन टन तक पंहुचा

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि भारत का चावल उत्पादन 150.18 मिलियन टन तक पहुंच गया है, जबकि चीन का उत्पादन 145.28 मिलियन टन रहा। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि उच्च पैदावार वाले बीजों के विकास और कृषि अनुसंधान में निरंतर प्रगति का परिणाम है। चौहान ने कहा कि भारत अब वैश्विक बाजार में एक प्रमुख चावल निर्यातक देश के रूप में भी उभर चुका है।

25 फसलों की 184 उन्नत किस्मों को किया लॉन्च

राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित एक कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) द्वारा विकसित 25 फसलों की 184 उन्नत किस्मों को लॉन्च किया। इन 184 किस्मों में 122 अनाज, 6 दालें, 13 तिलहन, 11 चारा फसलें, 6 गन्ना, 24 कपास और जूट एवं तंबाकू की एक-एक किस्म शामिल हैं।

कृषि मंत्री ने नई किस्मों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाने दिए निर्देश

कृषि मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन नई किस्मों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि उन्नत किस्मों से किसानों को अधिक पैदावार और बेहतर गुणवत्ता वाली फसल प्राप्त होगी, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी। चौहान ने कृषि वैज्ञानिकों से दालों और तिलहनों के उत्पादन को बढ़ाने पर विशेष ध्यान देने का आह्वान किया, ताकि देश को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

11 वर्षों में 3,236 उच्च उपज वाली किस्मों को दी गई मंजूरी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के सत्ता में आने के बाद पिछले 11 वर्षों में 3,236 उच्च उपज वाली किस्मों को मंजूरी दी गई है, जबकि 1969 से 2014 के बीच केवल 3,969 किस्मों को ही स्वीकृति मिली थी। नई जारी की गई किस्मों को जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की लवणता, सूखा और अन्य जैविक एवं अजैविक चुनौतियों से निपटने के साथ-साथ प्राकृतिक और जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विकसित किया गया है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

सस्ता टूर पैकेज और लिजिए पर्यटन का आनंद

◦ छत्तीसगढ़ में शुरू होने जा रहा है पर्यटन का नया अध्याय

◦ मुख्यमंत्री जन पर्यटन प्रोत्साहन योजना की होगी शुरुआत

छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग एवं आईआरसीटीसी मिलकर मुख्यमंत्री जन पर्यटन प्रोत्साहन योजना के तहत रायपुर और बस्तर में पर्यटकों के लिए विशेष टूर पैकेजों की शुरुआत जल्द ही करने जा रहे हैं। यह पहल प्रदेश की सांस्कृतिक, धार्मिक और प्राकृतिक विरासत के प्रसार के साथ-साथ पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस योजना के अंतर्गत रायपुर से चार प्रमुख टूर पैकेज संचालित किए जाएंगे, जिनमें रायपुर सिटी टूर, रायपुर सिटी धार्मिक टूर, रायपुर-जगदलपुर सर्किट टूर और रायपुर-सिरपुर-बारनवापारा सर्किट टूर शामिल हैं। प्रत्येक पैकेज में वातानुकूलित वाहन, हिंदी-अंग्रेजी गाइड, भोजन और ट्रैवल इंश्योरेंस जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी, जिससे पर्यटक आरामदायक और सुरक्षित यात्रा का आनंद ले सकेंगे। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि पर्यटन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए यह महत्वपूर्ण योजना शुरू की गई है। इससे न केवल आर्थिक विकास को बल मिलेगा, बल्कि छत्तीसगढ़ की पहचान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक सशक्त होगी। पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि यह योजना स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ-साथ रोजगार के व्यापक अवसर भी उपलब्ध कराएगी। उन्होंने कहा, “हम चाहते हैं कि छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक समृद्धि हर पर्यटक तक पहुँचे।”

प्रमुख टूर पैकेज

रायपुर सिटी टूर (दिवसीय भ्रमण)

इस टूर में पर्यटक रायपुर के प्रमुख स्थलों-राम मंदिर, ऊर्जा पार्क, पुरखौती मुक्तांगन, छत्तीसगढ़ ट्राइबल म्यूजियम, नंदनवन जू और कौशल्या माता मंदिर की सैर कर सकेंगे। पैकेज में वातानुकूलित वाहन, हिंदी/अंग्रेजी गाइड, भोजन और यात्रा बीमा शामिल है। प्रस्थान रायपुर रेलवे स्टेशन से होगा।

रायपुर सिटी धार्मिक टूर (दिवसीय भ्रमण)

धार्मिक स्थलों पर केंद्रित यह टूर हनुमान मंदिर, मां बंजारी मंदिर, कैवल्य धाम जैन मंदिर, इस्कॉन मंदिर, महामाया मंदिर, दंतेश्वरी माता मंदिर, राम मंदिर और मां कौशल्या माता मंदिर की यात्रा का अनुभव प्रदान करेगा। इस टूर की शुरुआत और समापन भी रायपुर रेलवे स्टेशन से ही होगा।

रायपुर-जगदलपुर सर्किट टूर (02 रातें /03 दिन)

इस पैकेज में बस्तर क्षेत्र के प्राकृतिक और सांस्कृतिक स्थलों-जगदलपुर, चित्रकोट, तीरथगढ़-की यात्रा शामिल है। पर्यटक चित्रकोट जलप्रपात, कुटुमसर गुफा, कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान और दंतेश्वरी मंदिर जैसे प्रमुख आकर्षणों का आनंद ले सकेंगे। ठहराव डबल-शेयरिंग होटल में होगा तथा दैनिक भोजन की व्यवस्था रहेगी।

रायपुर-सिरपुर-बारनवापारा सर्किट टूर (01 रात /02 दिन)

यह टूर सिरपुर के ऐतिहासिक मंदिरों और बारनवापारा वन्यजीव अभयारण्य की सैर करवाएगा। पैकेज में स्नैक्स, भोजन, होटल आवास और वातानुकूलित वाहन शामिल हैं। पर्यटकों को जंगल सफारी का रोमांचक अनुभव भी मिलेगा।

टूर पैकेज की विशेषताएं

प्रत्येक पैकेज के लिए कम से कम 10 व्यक्तियों का समूह आवश्यक है। यात्रा के दौरान पर्यटकों को पीने का पानी, स्नैक्स, लंच और ट्रैवल इंश्योरेंस दिया जाएगा। 2 से 18 वर्ष तक के बच्चों को 85% और 18 वर्ष से अधिक के वयस्कों को 75% सब्सिडी प्रदान की जाएगी। सभी पैकेज रायपुर रेलवे स्टेशन से शुरू और समाप्त होते हैं।

स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा

इन टूर पैकेजों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक, धार्मिक और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए पर्यटन क्षेत्र में नई ऊर्जा लाई जा रही है। पर्यटक इन पैकेजों के जरिए प्रदेश की विविधता और समृद्धि का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे। इस योजना से स्थानीय व्यवसायों को लाभ मिलेगा और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। यह योजना मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की पर्यटन को बढ़ावा देने की दूरदर्शी पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य पर्यटन को जन-जन तक पहुँचाकर प्रदेश के आर्थिक विकास को गति देना है। इससे छत्तीसगढ़ के पर्यटन को नई पहचान मिलेगी और पर्यटक राज्य को नए दृष्टिकोण से जानने-समझने का अवसर प्राप्त करेंगे।

राज्य बाल संरक्षण नीति से मजबूत होंगे बच्चों के अधिकार

◦ **सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने ड्राफ्ट पर चर्चा तेज**

छत्तीसगढ़ में बच्चों के संरक्षण, अधिकारों की सुरक्षा और उनके सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रायपुर में छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण नीति – 2025 के ड्राफ्ट प्रारूप को अंतिम रूप देने हेतु राज्य स्तरीय परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा यूनिसेफ (UNICEF) के सहयोग से आयोजित यह कार्यशाला एक सुदृढ़, समन्वित एवं अधिकार – आधारित बाल संरक्षण तंत्र विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम रही।

कार्यशाला में नीति के मसौदे पर विशेषज्ञों, हितधारकों एवं विभागीय अधिकारियों से अंतिम सुझाव प्राप्त किए गए। इस दौरान बाल विवाह एवं बाल श्रम की रोकथाम, अनाथ व बेसहारा बच्चों का पुनर्वास, बाल तस्करी, हिंसा, उपेक्षा, कुपोषण तथा साइबर अपराधों से बच्चों की सुरक्षा जैसे विषयों पर गहन विमर्श हुआ। महिला एवं बाल विकास विभाग की सचिव शम्मी आबिदी ने नीति के ड्राफ्ट एवं कार्ययोजना की प्रस्तुति देते हुए बताया कि यह नीति किशोर न्याय अधिनियम, 2015, UNCRC एवं अन्य राष्ट्रीय विधिक प्रावधानों के अनुरूप, राज्य

की सामाजिक व भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए तैयार की जा रही है। कार्यशाला में छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा ने बाल अधिकारों की निगरानी, शिकायत निवारण तंत्र को सशक्त करने तथा संस्थागत एवं गैर-संस्थागत देखभाल की गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर बल दिया।

इस अवसर पर संयुक्त सचिव स्कूल शिक्षा फरिहा आलम,संचालक समाज कल्याण रोक्तिमा यादव, संचालक ट्रेजरी और एकाउंट पद्मिनी भोई साहू, संचालक महिला एवं बाल विकास डॉ. रेणुका श्रीवास्तव, यूनिसेफ की प्रतिनिधि चेतना देसाई, कर्नाटक राज्य के प्रतिनिधि, संयुक्त संचालक नन्दलाल चौधरी, उप संचालक नीलम देवांगन सहित स्वास्थ्य, गृह (पुलिस), श्रम, पंचायत एवं नगरीय प्रशासन विभागों के अधिकारी, SCPS/DCPS, स्वयंसेवी संस्थाएं एवं कानूनी विशेषज्ञ उपस्थित रहे। तकनीकी सत्र में अर्लेन मनोहरन, सोनीकुट्टी जॉर्ज, एम.आर. गोविंद बेनीवाल, निमिषा श्रीवास्तव, नूपुर पांडे, चिरंजीवी जैन, प्रमोद गुप्ता एवं प्रभात कुमार ने नीति के प्रभावी क्रियान्वयन, बहु-विभागीय समन्वय और निगरानी व्यवस्था पर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। ड्राफ्ट नीति की समीक्षा हेतु प्रतिभागियों को विभिन्न समूहों में विभाजित कर गहन चर्चा की गई। अधिकारियों ने बताया कि प्राप्त सुझावों को सम्मिलित कर छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण नीति-2025 को अंतिम रूप दिया जाएगा, जिससे यह राज्य के प्रत्येक बच्चे के लिए सुरक्षा और अधिकारों का मजबूत कवच बन सके।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

एक धड़कन, जिसने बदल दी ज़िंदगी

प्रोजेक्ट धड़कन के तहत ईलाज से मिली अरमान को हृदय रोग से मुक्ति

गांव में मितानिन ने एक दिन कहा था, "आपके बच्चे की धड़कन बाकी बच्चों से तेज है," यह वाक्य आज भी रजनी यादव के कानों में गूंजता है। वे बोलते-बोलते रो पड़ती हैं, "हमने कभी ध्यान ही नहीं दिया अब लगता है, क्यों नहीं दिया!" गोगांव, रायपुर की रहने वाली रजनी यादव का तीसरा बेटा अरमान, अपने दोनों बड़े भाईयों और दोस्तों के साथ हंसता-खेलता बड़ा हो रहा था। कभी पिट्ठूल खेलता, कभी दौड़ लगाता, सब कुछ सामान्य लगता था। बस बार-बार होने वाला सर्दी-बुखार माता-पिता को थोड़ा परेशान जरूर करता था, लेकिन किसी को अंदेशा नहीं था कि उस मासूम सी हंसी के पीछे एक गंभीर खतरा छिपा है। फिर 13 दिसंबर 2025 का दिन आया। सरोरा स्थित शासकीय स्कूल में, कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के निर्देशानुसार पहुँची चिरायु टीम ने जब बच्चों की जांच शुरू की, तो अरमान की बारी पर डॉक्टर ठिठक गए। उसके हृदय की धड़कन सामान्य नहीं थी। यही वह पल था, जिसने एक परिवार की जिंदगी की दिशा बदल दी। प्रोजेक्ट धड़कन छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले की एक स्वास्थ्य पहल है, जिसका उद्देश्य मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर बच्चों में जन्मजात हृदय रोगों (Congenital Heart Diseases & CHDs) का जल्द पता लगाना और उनका मुफ्त इलाज कराना है, जिसमें श्री सत्य साई हॉस्पिटल और जिला प्रशासन मिलकर काम कर रहे हैं, विशेष स्वास्थ्य शिविर लगाकर बच्चों की जांच की जाती है और उन्हें आवश्यक डिजिटल उपकरण (जैसे स्टेथोस्कोप) प्रदान किए जाते हैं। टीम अरमान को तत्काल श्री सत्य साई नारायण अस्पताल, नया रायपुर लेकर गई। विस्तृत जांच हुई और रिपोर्ट ने माता-पिता के पैरों तले जमीन खिसका दी। अरमान के दिल में 18 मिमी का छेद था। डॉक्टरों ने बिना देर किए कहा, "ऑपरेशन जरूरी है।" ईंट-भट्ठे में काम करने वाले पिता श्री रंगनाथ यादव और मां रजनी के सामने सवालों का पहाड़ खड़ा था कि पैसे का इंतजाम कैसे होगा?

हिम्मत नहीं हारी, सलाह पर भरोसा किया

बच्चा का स्वास्थ्य, उसका भविष्य कैसा होगा? लेकिन उस घड़ी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। चिरायु टीम की सलाह पर भरोसा किया और अपने बेटे को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। जिला प्रशासन द्वारा संचालित प्रोजेक्ट 'धड़कन' के अंतर्गत 28 दिसंबर 2025 को विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख में अरमान का जटिल हृदय ऑपरेशन पूरी तरह निःशुल्क सफलतापूर्वक किया गया। लगातार निगरानी और देखभाल के बाद कुछ ही दिनों में वह डिस्चार्ज होकर घर वापिस आ गया। आज जब अरमान पिट्ठूल खेलता है, दोस्तों के पीछे भागता है, तो यह विश्वास करना मुश्किल हो जाता है कि सिर्फ एक हफ्ते पहले वह अस्पताल में एक जटिल सर्जरी प्रक्रिया से गुजर रहा था। चिरायु टीम द्वारा लगातार फॉलो-अप किया जा रहा है। डॉक्टरों के अनुसार अरमान की सेहत में उल्लेखनीय सुधार है और वह पूरी तरह स्वस्थ है। उसके चेहरे की मुस्कान आज सिर्फ उसके परिवार की नहीं, पूरे मोहल्ले की खुशी बन गई है।

दिल को फिर से धड़कने का मौका

भावुक होकर रजनी यादव कहती हैं, "अगर समय पर जांच और ईलाज नहीं मिलता, तो शायद आज मेरा बच्चा मेरे सामने न होता।" वहीं पिता रंगनाथ यादव कहते हैं, मेरे पास न पैसा था, न साधन लेकिन प्रोजेक्ट धड़कन ने मेरे बेटे को नई जिंदगी दे दी।" आज अरमान केवल अपने माता-पिता का सहारा नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए आशा, विश्वास और समय पर मिली मदद की ताकत का प्रतीक बन चुका है। यह कहानी सिर्फ एक बच्चे के बचने की नहीं है - यह कहानी है संवेदनशील शासन, समय पर हस्तक्षेप और उस भरोसे की, जो एक मासूम दिल को फिर से धड़कने का मौका दे सका।

ब्रश करते समय फटी गर्दन की नस

पल-पल में था जोखिम भरा फिर भी जीती जिंदगी की जंग

छत्तीसगढ़ की सरकारी चिकित्सा व्यवस्था ने एक बार फिर विश्व स्तर पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। पंडित जवाहरलाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर से संबद्ध डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय के हार्ट, चेस्ट एवं वैस्कुलर सर्जरी विभाग ने असाधारण चिकित्सकीय दक्षता का परिचय देते हुए एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। गर्दन की मुख्य धमनी कैरोटिड आर्टरी के स्वत: फट जाने जैसी अत्यंत दुर्लभ, जटिल और जानलेवा स्थिति में विभाग के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने समय रहते अत्यधिक चुनौतीपूर्ण सर्जरी कर 40 वर्षीय मरीज की जान बचाई। यह प्रकरण न केवल छत्तीसगढ़ में अपनी तरह का पहला मामला है, बल्कि अब तक विश्व के मेडिकल जर्नलों में ऐसे केवल 10 ही मामले दर्ज होने से इसकी गंभीरता और उपलब्धि का महत्व और भी बढ़ जाता है।

ब्रश करते समय अचानक रप्चर (फटी) हुई गर्दन की धमनी

रायपुर निवासी 40 वर्षीय मरीज जब सुबह घर पर दांत साफ कर रहा था, तभी अचानक

- मेकाहारा के हार्ट, चेस्ट एंड वैस्कुलर सर्जरी विभाग में हुई दुर्लभ सर्जरी
- विश्व में ऐसे केस में केवल 10 के रिकॉर्ड हैं मेडिकल जर्नल में दर्ज

उसके गले में तेज दर्द हुआ और देखते ही देखते पूरे गर्दन में सूजन आ गई। कुछ ही क्षणों में मरीज बेहोश हो गया। परिजन उसे तत्काल अम्बेडकर अस्पताल के आपातकालीन विभाग लेकर गए।

सीटी एंजियोग्राफी जाँच से पता चला दुर्लभ केस

गर्दन के नसों की सीटी एंजियोग्राफी जांच में यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि मरीज की दायीं कैरोटिड आर्टरी फट चुकी है और उसके चारों ओर गुब्बारानुमा संरचना बन गई है, जिसे कैरोटिड आर्टरी स्यूडोएन्युरिज्म (Carotid Artery Pseudoaneurysm) कहा जाता है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मरीज को तत्काल हार्ट, चेस्ट एवं वैस्कुलर सर्जरी विभाग में में डॉ कृष्ण कांत साहू के पास भेजा गया।

50 से 60% सफलता दर वाली सर्जरी, हर पल था जोखिम भरा

यह ऑपरेशन अत्यंत जोखिमपूर्ण था। गर्दन में खून के अत्यधिक जमाव के कारण धमनी को पहचानना बेहद कठिन था। जरा सी चूक से मरीज की जान जा सकती थी या ऑपरेशन के दौरान मस्तिष्क में खून का थक्का पहुंचने से लकवा या ब्रेन डेड होने का खतरा था। मरीज और परिजनों को सभी जोखिमों की जानकारी देकर सर्जरी की सहमति ली गई।

बोवाइन पेरिकार्डियम पैच से की गई धमनी की मरम्मत

लगभग कई घंटे चले इस चुनौतीपूर्ण ऑपरेशन में बोवाइन पेरिकार्डियम पैच की सहायता से फटी हुई कैरोटिड आर्टरी को अत्यंत सावधानीपूर्वक रिपेयर किया गया। सर्जरी पूरी तरह सफल रही और राहत की बात यह रही कि मरीज को किसी भी प्रकार का लकवा नहीं हुआ। वर्तमान में मरीज पूरी तरह स्वस्थ है सामान्यत: कैरोटिड आर्टरी के फटने की घटनाएं एथेरोस्क्लेरोसिस, ट्रामा, कनेक्टिव टिश्यू डिसऑर्डर,संक्रमण या टयूमर से ग्रस्त मरीजों में देखी जाती हैं, लेकिन यह मरीज पूरी तरह स्वस्थ था। अपने आप कैरोटिड आर्टरी का फटना (Spontaneous Carotid Artery Rupture) चिकित्सा जगत में अत्यंत दुर्लभ माना जाता है।

क्या होती है कैरोटिड आर्टरी

कैरोटिड आर्टरी गर्दन के दोनों ओर स्थित प्रमुख धमनी होती है, जो हृदय से मस्तिष्क तक रक्त का प्रवाह सुनिश्चित करती है। इसके क्षतिग्रस्त होने पर मरीज की जान को तत्काल खतरा होता है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

सुपेबेड़ा में शुद्ध पानी के अभाव से मौतें

किडनी रोग ने छीनी सैकड़ों जिंदगियां, सरकारी दावे फिर बेनकाब

रिपोर्ट: तुकाराम कंसारी

देश-दुनिया में किडनी रोग और उससे होने वाली असामयिक मौतों के कारण चर्चा में रहा छत्तीसगढ़ का सुपेबेड़ा गांव आज भी त्रासदी की उसी आग में जल रहा है। गरियाबंद जिले के देवभोग विकासखंड का यह सुदूर वनांचल गांव वर्षों से किडनी की घातक बीमारी के कहर से जूझ रहा है, लेकिन हालात में कोई ठोस सुधार नहीं हो सका है। गांव में बीमारी का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा और मौतों का आंकड़ा ग्रामीणों के अनुसार सैकड़ों को पार कर चुका है।

गांव की गलियों में सन्नाटा है, हर घर में बीमारी या मौत की कोई न कोई कहानी दबी हुई है। कई मरीज जीवन बचाने के लिए डायलिसिस पर निर्भर हैं, तो कई का इलाज एम्स रायपुर जैसे बड़े अस्पतालों में चल रहा है। बावजूद इसके, सुपेबेड़ा में आज भी शुद्ध पेयजल एक सपना बना हुआ है। ग्रामीणों का साफ कहना है कि दूषित पानी ही इस भयावह बीमारी की सबसे बड़ी वजह है।

हैंडपंप सूखे, पानी जहर बना

स्थिति यह है कि गांव के अधिकतर हैंडपंप या तो पूरी तरह खराब हो चुके हैं या फिर कुछ ही देर में पानी देना बंद कर देते हैं। 2-4 गंडी पानी भरते ही हैंडपंप सूख जाते हैं। गिरते जलस्तर ने हालात और बदतर कर दिए हैं। बोरवेल के पानी की जांच में फ्लोराइड और आर्सेनिक की मात्रा तय सीमा से अधिक पाई गई है, जो सीधे किडनी पर प्रहार कर रही है।

करोड़ों के वाटर प्लांट, फिर भी प्यासा गांव

शासन-प्रशासन ने शुद्ध पेयजल के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च कर गांव में 10-12 स्थानों पर वाटर ट्रीटमेंट प्लांट तो लगाए, लेकिन ये ग्रामीणों के काम नहीं आ रहे। कुछ प्लांट पिछले 5 महीनों से बंद पड़े हैं, तो कुछ 3-4 महीनों से खराब हालत में हैं। रखरखाव के अभाव में ये योजनाएं दम तोड़ चुकी हैं, और जिनके लिए ये लगाए गए थे किडनी पीड़ित वही आज सबसे ज्यादा परेशान हैं।

2005 से अब तक नहीं टूटी बीमारी की कड़ी

सुपेबेड़ा की यह त्रासदी नई नहीं है। सरकारी रिकॉर्ड और मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 2005 से अब तक सैकड़ों लोगों की जान इस बीमारी ने ले ली है। स्वास्थ्य विभाग ने डायलिसिस यूनिट, विशेष वार्ड और इलाज की सुविधाएं जरूर बढ़ाईं, लेकिन बीमारी की जड़-शुद्ध पानी-पर आज तक निर्णायक प्रहार नहीं हुआ।

जल जीवन मिशन पर टिकी आखिरी उम्मीद

हाल ही में जल जीवन मिशन के तहत तेल नदी से सुपेबेड़ा तक शुद्ध पानी लाने की योजना को मंजूरी मिली है, लेकिन इसका क्रियान्वयन धीमी गति से चल रहा है। गांववालों की उम्मीदें इसी योजना से जुड़ी हैं, पर उन्हें डर है कि कहीं यह भी कागजों में ही न सिमट जाए।

कब लौटेगी मुस्कान?

सुपेबेड़ा आज एक सवाल बनकर खड़ा है-क्या शुद्ध पानी जैसी बुनियादी जरूरत के बिना भी कोई समाज जीवित रह सकता है? ग्रामीण सरकार से मांग कर रहे हैं कि बंद पड़े वाटर प्लांटों को तुरंत चालू किया जाए, नियमित रखरखाव सुनिश्चित हो और नई पेयजल योजना को युद्धस्तर पर पूरा किया जाए।

क्योंकि जब तक सुपेबेड़ा को साफ पानी नहीं मिलेगा, तब तक यह गांव किडनी रोग के साए से मुक्त नहीं हो पाएगा-और मौत का यह सिलसिला यूं ही चलता रहेगा।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

बजट की कसौटी पर छत्तीसगढ़ : उम्मीदें, यथार्थ और चुनौतियाँ

रामेश्वर साहू
साहित्यकार, समीक्षक

फरवरी-मार्च आते ही देश में बजट को लेकर चर्चाओं का दौर तेज हो जाता है। आम नागरिक के लिए बजट महज आंकड़ों का पुलिंदा नहीं, बल्कि उसके घर की अर्थव्यवस्था का आईना होता है। इसी से उसकी आय-व्यय की दिशा तय होती है और भविष्य की उम्मीदें जुड़ती हैं। किंतु यह भी एक यथार्थ है कि बड़ी उम्मीदें अक्सर बड़ी निराशा का कारण बन जाती हैं। वर्तमान में केंद्र और राज्य-दोनों में 'डबल इंजन' की सरकार है, ऐसे में छत्तीसगढ़ को केंद्रीय बजट से उसका वाजिब हक मिलना न केवल अपेक्षित है, बल्कि आवश्यक भी।

राजकोषीय स्थितिः विकास बनाम संतुलन

छत्तीसगढ़ सरकार का पिछला बजट लगभग 1.65 लाख करोड़ रुपये का रहा है। राज्य का सकल घरेलू उत्पाद 6,35,917 करोड़ रुपये है, जबकि पूंजीगत व्यय 26,341 करोड़ रुपये निर्धारित किया गया। इन आंकड़ों के बीच सबसे चिंताजनक पहलू है 23,900 करोड़ रुपये का राजकोषीय घाटा।

राजकोषीय घाटा तब बढ़ता है जब सरकार अत्यधिक लोकलुभावन योजनाओं के सहारे जनसंतोष साधने का प्रयास करती है। महतारी वंदन जैसी योजनाएँ तात्कालिक राहत तो देती हैं, परंतु दीर्घकाल में राज्य की आर्थिक सेहत पर दबाव भी डालती हैं। छत्तीसगढ़ आज अपने यौवनकाल में है-जहाँ विकास की असीम संभावनाएँ हैं-पर इन्हें साकार करने के लिए वित्तीय अनुशासन उतना ही जरूरी है जितना सामाजिक कल्याण।

महंगाई और रोजगार : बजट की असली परीक्षा

हर बजट में महंगाई नियंत्रण और रोजगार सृजन को प्राथमिक लक्ष्य बताया जाता है, किंतु जमीनी हकीकत इससे मेल नहीं खाती। महंगाई थमने का नाम नहीं ले रही और रोजगार के अवसर अपेक्षित गति से नहीं बढ़ रहे। बजट में तमाम प्रयासों के बावजूद सरकारें इन दोनों मोर्चों पर अक्सर विफल नजर आती हैं। उम्मीद है कि आगामी बजट में महंगाई को स्थिर रखने और युवाओं के लिए ठोस रोजगार योजनाएँ बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

शिक्षा और स्वास्थ्य : घोषणाएँ बहुत, व्यवस्था कमजोर

शिक्षा और स्वास्थ्य-ये दोनों क्षेत्र हर बजट में बड़ी घोषणाओं का हिस्सा होते हैं, लेकिन वास्तविक संकट भी इन्हीं क्षेत्रों में सबसे गहरा है। नई शिक्षा नीति लागू कर देने मात्र से ज्ञान का विस्तार संभव नहीं। इसके लिए सुदृढ़ अधोसंरचना, पर्याप्त संसाधन और कुशल, प्रशिक्षित शिक्षकों की नितांत आवश्यकता है।

शिक्षक भर्ती को लेकर चुनावी वादों पर सरकार का ढुलमुल रवैया युवाओं की चिंता को और बढ़ाता है। कुकुरमुत्तों की तरह उग रही एक-कमरे की यूनिवर्सिटियाँ ज्ञान-विज्ञान के विस्तार के बजाय शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न लगा रही हैं। महाविद्यालयों में प्राध्यापकों की भारी कमी सर्वविदित है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में भी स्थिति चिंताजनक है। जिला अस्पताल डॉक्टरों के गंभीर संकट से जूझ रहे हैं। केवल आयुष्मान कार्ड से इलाज सुनिश्चित नहीं होताय सरकारी अस्पतालों में समुचित चिकित्सकीय व्यवस्था, संसाधन और मानवबल उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

अधोसंरचना : असंतुलित विकास की तस्वीर

विकास एक सतत प्रक्रिया है, जिसे किसी एक बजट से पूरा नहीं किया जा सकता। इसके लिए दूरगामी, परिणाममूलक सोच आवश्यक है। राज्य में भारत माला और राष्ट्रीय राजमार्गों के माध्यम से बड़ी सड़कों का विस्तार हुआ है, किंतु ग्रामीण सड़कों की बदहाली आज भी एक कड़वा सच है। सड़कें किसी भी अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा होती हैं-ये व्यापार, रोजगार और विकास को गति देती हैं।

राजस्व, खनिज और पर्यावरण रू

संतुलन की जरूरत

विकास के रास्ते तभी बनेंगे जब सरकारी खजाना भरेगा। छत्तीसगढ़ में खनिजों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है, लेकिन इसका वास्तविक लाभ सरकार से अधिक अवैध उत्खनन और परिवहन करने वालों को मिल रहा है। जल, जंगल और पहाड़ का विवेकपूर्ण और पारदर्शी उपयोग समय की मांग है, ताकि विकास के साथ पर्यावरण संतुलन भी बना रहे।

साहित्य, संस्कृति और लोकजीवन

साहित्य और संस्कृति किसी भी राज्य को उसकी विशिष्ट पहचान देते हैं। आदिवासी बहुल छत्तीसगढ़ में कला, संस्कृति और लोकपरंपराओं की समृद्ध विरासत है। इनके संरक्षण, परिमार्जन और संवर्धन के लिए पर्याप्त बजट आवंटन अनिवार्य है। संस्कृति विभाग की बदहाली के कारण लोक कलाकार आज भी लाभ से वंचित हैं-आगामी बजट में इस ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

उद्योग नीति और जनहित

नई उद्योग नीति का लाभ केवल बड़े निवेशकों तक सीमित न रहकर आम छत्तीसगढ़िया तक पहुँचे-यह सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है। साथ ही, औद्योगिक विकास के साथ बढ़ते प्रदूषण के खिलाफ ठोस और व्यापक कदम उठाना भी उतना ही जरूरी है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, बजट ऐसा हो जो विकास को गति दे, लेकिन उसका वित्तीय भार आम जनता की जेब पर असहनीय न पड़े। छत्तीसगढ़ के लिए यह बजट केवल खर्च का दस्तावेज नहीं, बल्कि संतुलित, समावेशी और दूरदर्शी विकास की दिशा तय करने का अवसर होना चाहिए। यही बजट की असली कसौटी है।

बुद्ध का मौन उपदेश: अपमान भी तभी चोट करता है, जब हम उसे अपनाते हैं”

– प्रशांत कुमार सोनवानी

बुद्ध का मौन उपदेश: अपमान भी तभी चोट करता है, जब हम उसे अपनाते हैं”

एक बार गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक गाँव से गुजर रहे थे। गाँव के कुछ लोग उनसे बहुत क्रोधित थे। उन्होंने बुद्ध को अपशब्द कहे, अपमान किया, पत्थर तक फेंके।

बुद्ध शांत रहे–न चेहरे पर क्रोध, न आँखों में शिकायत।

जब वे आगे बढ़ गए, एक शिष्य ने पूछा,

“भगवान, आपने कुछ कहा क्यों नहीं? उन्होंने आपका इतना अपमान किया।”

बुद्ध मुस्कुराए और बोले,

“यदि कोई तुम्हें उपहार देना चाहे और तुम उसे स्वीकार न करो, तो वह उपहार किसका रहता है?”

शिष्य बोला, “जो देने आया था, उसी का।”

बुद्ध ने कहा,

“बस यही बात है। उनका क्रोध, उनकी नफरत – मैंने स्वीकार नहीं की। इसलिए वह उन्हीं की रही।”

थोड़ी देर रुककर बुद्ध ने आगे कहा,

“दुनिया तुम्हें वही दे सकती है, जो तुम्हारे भीतर है। यदि तुम्हारे भीतर शांति है, तो अपमान भी तुम्हें हिला नहीं सकता।
और यदि भीतर क्रोध है, तो सम्मान भी तुम्हें शांत नहीं कर पाएगा।”

यह सुनकर शिष्य समझ गया–

शांति बाहर से नहीं, भीतर से आती है।

बिना चीनी स्वादिष्ट तिल के लड्डू

स्वाद और सेहत का बेजोड़ मेल

सर्दियों में शरीर को गर्माहट देने के लिए लोग तिल का सेवन खूब करते हैं। तिल सेहत के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। ऐसे में लोग इससे अलग अलग तरह की चीजें बनाते हैं। जिसमें तिल के लड्डू भी शामिल हैं। आमतौर पर तिल के लड्डू चीनी से बनाए जाते हैं। लेकिन आज हम आपको बिना चीनी के तिल के लड्डू बनाने के तरीके के बारे में बताने जा रहे हैं। ये स्वादिष्ट होने के साथ साथ सेहत का भी खजाना है। तो चलिए जानते हैं बिना चीनी के तिल का लड्डू कैसे बनाएं।

सामग्री

सफेद तिल – 2 कप
गुड़ (कद्दूकस किया हुआ) – 1.5 कप
मूंगफली (भुनी और कुटी हुई) – 1/4 कप
इलायची पाउडर – 1/2 छोटा चम्मच
घी – 1 बड़ा चम्मच

बनाने की विधि

स्टेप 1 - एक कड़ाही में सफेद तिल डालें और धीमी आंच पर 4-5 मिनट तक भूनें। जब तिल हल्के फूल जाएं और चटकने लगें, तो उन्हें एक प्लेट में निकाल लें।

स्टेप 2 – अगर आप मूंगफली डाल रहे हैं, तो उन्हें भूनकर छिलका उतार लें और दरदरा कूट लें।

स्टेप 3 – उसी कड़ाही में 1 चम्मच घी गरम करें और उसमें कद्दूकस किया हुआ गुड़ डालें। 1-2 चम्मच पानी डाल दें ताकि गुड़ आसानी से पिघल जाए।

स्टेप 4 – जब गुड़ में झाग आने लगे, तो एक कटोरी पानी में एक बूंद गुड़ टपकाकर देखें। अगर वह फैलने के बजाय एक जगह इकट्ठा होकर सख्त होने लगे, तो समझिये चाशनी तैयार है।

स्टेप 5 – अब गैस धीमी करें और इसमें भुने हुए तिल, कुटी मूंगफली और इलायची पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं। फिर गैस बंद कर दें।

स्टेप 6 – मिश्रण को हल्का ठंडा होने दें। फिर हथेलियों पर थोड़ा घी या पानी लगाएं और गरम-गरम मिश्रण से गोल-गोल लड्डू बना लें।

यूट्यूब पर 100 मिलियन व्यूज

धुरंधर का गाना ‘शरारत’ बना चार्टबस्टर

◦ आयशा खान बोलीं - ‘यह सब भारी पड़ रहा’

रणवीर सिंह स्टारर फिल्म ‘धुरंधर’ का डांस नंबर ‘शरारत’ दर्शकों के बीच जबरदस्त लोकप्रियता हासिल कर चुका है। यूट्यूब पर इस गाने ने 100 मिलियन (10 करोड़) व्यूज का आंकड़ा पार कर लिया है, जिसके साथ ही यह गाना ऑफिशियल तौर पर चार्टबस्टर बन गया है। गाने की इस बड़ी सफलता पर इसमें नजर आईं अभिनेत्री आयशा खान ने खुशी जाहिर करते हुए सोशल मीडिया पर एक भावुक नोट शेयर किया है। 100 मिलियन व्यूज पूरे होने के बाद आयशा खान ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो साझा किया। इस वीडियो में वह थिएटर के अंदर बैठकर फिल्म ‘धुरंधर’ देखती नजर आ रही हैं। थिएटर दर्शकों से पूरी तरह भरा हुआ है और जैसे ही स्क्रीन पर ‘शरारत’ गाना आता है, आयशा मुस्कुराते हुए उसके साथ गुनगुनाती दिखाई देती हैं। वीडियो के साथ आयशा ने एक लंबा कैप्शन लिखा, जिसमें उन्होंने दर्शकों का आभार जताया। उन्होंने लिखा, “100 मिलियन व्यूज!!! बड़ी स्क्रीन पर खुद को देखना, वो भी पूरी तरह भरे हुए थिएटर में यह अनुभव शब्दों से परे है। ‘शरारत’ को मिल रहा प्यार मेरे लिए बेहद अभिभूत कर देने वाला है।”

टीम को दिया खास धन्यवाद

आयशा खान ने अपने नोट में फिल्म की कास्ट और क्रू को भी धन्यवाद दिया। उन्होंने कास्टिंग डायरेक्टर और फिल्म की प्रोडक्शन टीम का आभार जताते हुए लिखा कि उनके भरोसे और सपोर्ट ने उन्हें यहां तक पहुंचाया। आयशा ने कहा कि ऐसे लोग कलाकारों की जिंदगी बदल देते हैं और उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

शादी के जश्न में फिल्माया गया है ‘शरारत’

‘शरारत’ गाना फिल्म में एक शादी के जश्न के दौरान फिल्माया गया है, जहां आयशा खान और क्रिस्टल डिसूजा एक पॉश कराची वेडिंग में डांसर की भूमिका में नजर आती हैं। गाने का म्यूजिक साश्वत सचदेव ने दिया है, जबकि इसे मधुबंती बागची और जैस्मिन सैंडलस ने अपनी आवाज दी है। गाने की कोरियोग्राफी मशहूर कोरियोग्राफर विजय गांगुली ने की है।

‘धुरंधर’ बनी 2025 की सबसे बड़ी हिट

फिल्म ‘धुरंधर’ एक स्पाई थ्रिलर है, जिसमें रणवीर सिंह लीड रोल में नजर आ रहे हैं। उनके साथ फिल्म में अक्षय खन्ना, अर्जुन रामपाल, आर. माधवन और संजय दत्त जैसे दिग्गज कलाकार अहम भूमिकाओं में दिखाई देते हैं। फिल्म को दर्शकों और समीक्षकों दोनों से शानदार रिस्पॉन्स मिला है और यह 2025 की भारत की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन चुकी है।

गणतंत्र दिवस की कोटिशः मंगलकामनाएँ

माननीय नीलम चंद्राकर जी
सदस्य : जिला पंचायत
धमतरी (छ.ग.)

माननीया तारिणी चंद्राकर जी
अध्यक्ष : जिला कांग्रेस कमेटी
धमतरी (छ.ग.)

।।विनीत।।
एक शुभचिंतक कार्यकर्ता, कुरुद

प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति मर्यादित कोकड़ी (नारी) की ओर से

किसान साथियों को गणतंत्र दिवस की

कोटिशः शुभकामनाएं

दिलीप चक्रधारी
(प्राधिकृत अधिकारी)

जनक लाल निषाद
(व्यवस्थापक)

कुंभकरण निषाद
(लेखापाल)

अखिलेश्वर प्रसाद साहू
(कंप्यूटर ऑपरेटर)

बीरबल निषाद
(सहायक लेखक)

वीरेंद्र कुमार साहू
(सहायक ऑपरेटर)

।।विनीत।।

प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति कोकड़ी (नारी)
पं.क्र.1179 वि.ख. कुरूद, जिला धमतरी (छ.ग.)